आमुख

वृहद् आर्थिक समाहारों जैसे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), राष्ट्रीय आय, उपभोग व्यय, पूंजी निर्माण आदि के जरिए वास्वतिक अर्थ में अर्थव्यवस्था के निष्पादन की जांच के लिए समाहारों के अनुमान चयनित वर्ष के मूल्यों पर तैयार किए जाते हैं जिसे आधार वर्ष के रूप में जाना जाता है । विभिन्न प्राथमिक स्रोतों से उपलब्ध मूल आंकड़े राष्ट्रीय आय तथा संबंधित समाहारों के आकलन के लिए प्रयोग किए जाते हैं । संकलन की अवधारणा एवं कार्य प्रणाली को संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (यूएन-एसएनए) के अंतर्गत प्रधानतः मानक रूप दिया गया है । चालू वर्ष के मौजूदा मूल्यों के अनुमानों को "प्रचलित मूल्य पर" जाना जाता है जबकि जो आधार वर्ष मूल्यों पर तैयार किए गए उनको "स्थिर मूल्य पर" जाना जाता है । स्थिर मूल्य पर अनुमानों की तुलना जिसका मतलब "वास्तविक अर्थ में" होता है, वास्तविक वृद्धि के मापदंड को बताती है । राष्ट्रीय लेखे का आधार वर्ष संरचनात्मक परिवर्तनों को ध्यान रखते हुए आवधिक रूप से बदल जाता है जो अर्थ व्यवस्था में घटित होते हैं तथा जो जीडीपी, उपभोग व्यय, पूंजी निर्माण आदि जैसे वृहद् समाहारों के जरिए अर्थव्यवस्था की वास्तविक तस्वीर को दर्शाते हैं ।

2. राष्ट्रीय आय के पहले सरकारी आकलनों को स्थिर मूल्य पर अनुमानों के लिए आधार-वर्ष 1948-49 पर केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (सीएसओ) द्वारा तैयार किया गया । प्रचलित मूल्यों पर तदनुरूपी अनुमानों सहित स्थिर (1948-49) मूल्यों पर आकलन तथा लोक प्राधिकारियों के लेखे वर्ष 1956 में "राष्ट्रीय आय के आकलन" में प्रकाशित हुए । विगत वर्षों में, मूल आंकड़ों की उपलब्धता में क्रमिक सुधार के साथ, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के लिए कार्य प्रणाली की व्यापक समीक्षा डेटाबेस को अद्यतन बनाने एवं आधार वर्ष को और अधिक नजदीकी वर्ष में बदलने के मद्देनजर सतत् रूप से शुरू की गई है । परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी श्रृंखला के आधार वर्ष अगस्त 1967 में 1948-49 से 1960-61, जनवरी 1978 में 1960-61 से 1970-71, फरवरी 1988 में 1970-71 से 1980-81, फरवरी 1999 में 1980-81 से 1993-94, जनवरी 2006 में 1993-94 से 1999-2000 तथा मार्च 2010 में 1999-2000 से 2004-05 में बदल दिए गए हैं ।

3. विगत में, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी जनगणना के साथ सामंजस्य बनाते हुए अंक "1" से समाप्त होने वाले वर्ष को आधार वर्ष में बदलते हुए दशवार्षिक रूप से संशोधित की गई थी । जनगणना से प्राप्त 'कार्यबल' के अनुमान आधार-वर्ष आकलन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । तथापि, यह देखा गया कि कामगार भागीदारी दर से संबंधित आंकड़े जो एनएसएसओ द्वारा प्राप्त किए गए, बहुत अनुकूल परिणाम देते हैं । तदनुसार, सीएसओ

एनएसएस सर्वेक्षण के आधार पर कार्यबल अनुमानों की उपलब्धता के अनुसार राष्ट्रीय लेखे का आधार-वर्ष संशोधित करता है ।

4. इस कवायद के क्रम में 2004-05 आधार वर्ष वाली राष्ट्रीय लेखा की नई श्रृंखला 31 जनवरी, 2010 को जारी की गई थी जिसमें पंचवार्षिक एनएसएस 61वें दौर सर्वेक्षण से प्राप्त डब्ल्यू पी आर आंकड़ों का प्रयोग किया गया है ।

5. आधार-वर्ष को 2004-05 में बदलने के अलावा, नई श्रृंखला यथासंभव व्यापक कवरेज के साथ राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एसएनए), 1993 तथा 2008 की कुछ सिफारिशों को शामिल करती है ।

6. नई श्रृंखला में प्रयुक्त महत्वपूर्ण नवीनतम आंकड़े (i) रोजगार एवं बेरोजगारी तथा उपभोक्ता व्यय संबंधी एनएसएस के 61वें दौर (2004-05), (ii) असंगठित विनिर्माणकारी संबंधी एनएसएस के 62वें दौर (2005-06), (iii) सेवा सेक्टर संबंधी एनएसएस के 63वें दौर (2006-07), (iv) अखिल भारतीय पशुधन गणना, 2003, (v) अखिल भारतीय ऋण एवं निवेश सर्वेक्षण संबंधी एनएसएस के 59वें दौर (2002-03), (vi) जनगणना, 2001, तथा (vii) लघु उद्योग की अखिल भारतीय गणना, 2006-07 के परिणाम हैं । दरों तथा अनुपातों को अपडेट करने के लिए नई श्रृंखला में कृषि मंत्रालय, वन मंत्रालय तथा राज्य सरकारों के जरिए सीएसओ द्वारा किए गए अध्ययन के परिणामों तथा सीएसओ द्वारा तैयार किए गए इनपुट-आउटपुट मैट्रिक्स का प्रयोग किया गया है ताकि चारे के उत्पादन, किसानों द्वारा दिए गए बाजार शुल्क, तथा विभिन्न प्रकार के पशुओं के मांस, मांस उत्पादों तथा मांस के उप-उत्पादों की उत्पादन दर, कृषि तथा वानिकी की इनपुट लागत तथा व्यापार एवं परिवहन की मार्जिन का अनुमान लगाया जा सके ।

7. कवरेज में जो सुधार किया गया है वह मुख्यत: वन से बाहर के वृक्षों (टीओएफ) से औद्योगिक लकड़ियों के उत्पादन, वन स्रोतों से चारे तथा जीडीपी में पवन उर्जा के उत्पादन के आउटपुट से संबंधित है ।

8. नई श्रृंखला में जो महत्वपूर्ण प्रक्रियात्मक बदलाव किए गए हैं, उनमें निम्नलिखित से संबंधित आंकड़े शामिल हैं- (i) जीडीपी के अंतिम अनुमानों के लिए राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों द्वारा तैयार की गई फसलों का उत्पादन एवं क्षेत्रफल; (ii) जहां तक कृषि क्षेत्र में उर्वरकों की खपत का संबंध है, फिलहाल कृषि क्षेत्र में निवेश के अनुमान तैयार करने के लिए उर्वरकों की खेप से संबंधित आंकड़ों का उपयोग किया जा रहा है, अब, इसके स्थान पर भारतीय

उर्वरक संघ से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग; (iii) पंजीकृत विनिर्माण क्षेत्र के जीडीपी का अनुमान लगाने के लिए औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) के बदले सीएसओ के उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण (एएसआई) के परिणाम; (iv) असंगठित विनिर्माण क्षेत्र तथा सेवा के जीडीपी के अनुमान के संबंध में स्थान के आधार पर वर्तमान समय में प्रयोग किए जा रहे श्रम इनपुट आंकड़ों के बदले कार्य-स्थल के आधार पर श्रम इनपुट; तथा (v) वर्तमान स्रोत, अर्थात रोजगार एवं प्रशिक्षण महानिदेशालय (डीजीइटी), श्रम मंत्रालय के वार्षिक रोजगार बाजार आसूचना (ईएमआई) के बदले एनएसएस रोजगार तथा बेरोजगारी सर्वेक्षण से संगठित सेक्टर के लिए श्रम इनपुट ।

9. नई श्रृंखला में जो अन्य प्रक्रियात्मक बदलाव किए गए हैं वे हैं- (i) 2008 एसएनए की सिफारिशों के अनुरूप सार्वजनिक क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) संबंधी व्यय को पूंजीगत व्यय मानना; (ii) स्थायी पूंजी तथा कैपिटल स्टॉक के उपभोग का अनुमान करने के लिए डिक्लाइनिंग बैलेंस (परिसंपत्तियों की आयु) मेथड को अपनाना; (iii) ग्रामीण क्षेत्रों में मकान मालिक द्वारा अपने कब्जे में रखी गई आवासीय इकाइयों की सेवाओं के अनुमान तैयार करने के लिए उपयोगकर्ता लागत तरीका अपनाया गया, जबकि वर्तमान में प्रति आवासीय इकाई किराया के आधार पर ये सेवाएं अधिरोपित की जाती हैं; (iv) औसत राजस्व प्रति प्रयोक्ता (एआरपीयू) के बारे में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर सांकेतिक रूप में संचार के प्रतिफल का अनुमान तैयार करना; तथा (v) स्वायत्त सरकारी निकायों तथा स्थानीय निकायों के खातों का सैंपल आधार पर विश्लेषण करते हुए उनके आउटपुट, उपभोग व्यय, बचत तथा पूंजी निर्माण के अनुमान में सुधार ।

10. जनवरी, 2010 में नई श्रृंखला शुरू करने के बाद सीएसओ ने मार्च, 2010 में "राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी संबंधी नई श्रृंखला" नामक एक ब्रोशर जारी किया जिसमें कवरेज, आंकड़ों के नए स्रोतों के उपयोग तथा राष्ट्रीय लेखा प्रणाली, 1993 तथा 2008 की कुछ सिफारिशों के समावेश के संदर्भ में नई श्रृंखला में किए गए बदलावों को शामिल किया गया ।

11. केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 1950-51 से राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के तुलनीय सेट के लिए उपयोगकर्ताओं की निरंतर मांग को ध्यान में रखते हुए, इस प्रकाशन के माध्यम से 1950-51 से 2004-05 की अवधि के लिए राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के अनुमानों की पिछली श्रृंखला जारी कर रहा है । इस प्रकाशन में प्रस्तुत आंकड़ों में आधार-वर्ष 2004-05 के साथ राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी की नई श्रृंखला के अनुसार, घरेलू उत्पाद, उद्योग/वस्तु स्तर पर पूंजी

निर्माण, और 1950-51 से 2004-05 की अवधि के लिए अन्य बृहद-आर्थिक समाहारों के अनुमान शामिल किए गए हैं । हमें आशा है कि सरकारी एजेंसियां, कारोबारी घराने, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां, शोध संस्थान, व्यक्तिगत शोधकर्ता और राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के अन्य उपयोगकर्ताओं के लिए यह प्रकाशन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा ।

एस.के. दास
महानिदेशक
केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय

नई दिल्ली